

श्रीजगद्गुरितं महाकाव्यम् (फोल्डर नं. ०२५५५)
ग्रन्थकार – श्री सर्वानन्दसूरिजी
नवीनसंस्करण सम्पादिका – साध्वी चन्दनबालाश्रीजी
प्रकाशक-भद्रंकर प्रकाशन अहमदाबाद
आवृत्ति-१, प्रकाशन वर्ष-२००९, पृष्ठ-१७२

मुख्य टाईटल	
प्रकाशकीय	७-८
उत्तमना गुण गावतां गुम आवे निज अंग	८-१०
संपादकीय	११-१२
वियददुप्रभृतिपूर्वपुरुषव्यावर्णनो नाम प्रथम सर्ग	१-९
भद्रेश्वरपुरव्यावर्णनो नाम द्वितीय सर्ग	१०-१३
रत्नाकरवरदानव्यावर्णनो नाम तृतीय सर्ग	१४-२०
भद्रसुरदर्शनो नाम चतुर्थ सर्ग	२१-२५
पीठदेवनरपतिदर्पदलनो नाम पञ्चम सर्ग	२६-३१
सकलजनसज्जीवनो नाम षष्ठ सर्ग	३२-४९
त्रिविष्टपप्रापणो नाम सप्तम सर्ग	५०-५६
श्रीजगद्गुरित – सर्ग १ लो	५७-६६
श्रीजगद्गुरित – सर्ग २ जो	६७-७१
श्रीजगद्गुरित – सर्ग ३ जो	७२-७८
श्रीजगद्गुरित – सर्ग ४ थो	८०-८५
श्रीजगद्गुरित – सर्ग ५ मो	८६-८९
श्रीजगद्गुरित – सर्ग ६ हो	९०-९२
श्रीजगद्गुरित – सर्ग ७ मो	९३-९८
परिशिष्टम – पधानामकाराधनुक्रम	११९-१३२
परिशिष्टम – विशेषनाम्नाकाराधनुक्रम	१३३-१३७
परिशिष्टम – जगद्गुरिसम्बन्ध	१३८-१४५
परिशिष्ट – जगद्गुरिप्रबन्धसारांश	१४२-१४५
परिशिष्ट – जगद्गुरिशांनां गावतां कवित	१४६-१४७
परिशिष्टम – महाकाव्यस्य व्याख्या	१४८